ऐ छात्र नौजवान

अपने देश को पहचान

COLLECTIVE

क्रान्तिज्योती
सावित्रीबाई फुले और फातिमा शेख

“
जो गालियाँ तुम्हारी ओर
उछाली गईं थी,
उन्हें धो-पोंछ
शब्द बीन लिए।
जो पत्थर फेंके गए,
उनसे पाठशाला बना ली।
जो गोबर फेंके गए,
उन्हीं से लीप कर,
उस पर बिठाया
उन्हीं की बेटियों को
जो सदियों से क़ैद थी।
”

सावित्रीबाई फुले ने फातिमा शेख के साथ महिलाओं के लिए देश में पहला स्कूल 1848 में खोला। शिक्षा पर जाति/लिंग-आधारित नियंत्रण को इन सार्वजनिक पाठशालाओं-होस्टलों से चोट पहुंची। हर सुबह जब वो पढ़ाने जाती, तब उनपर लोग कीचड़ उछालते थे। इससे बचने के लिए वह रोज़ अपने साथ एक साफ़ साड़ी लेकर चलती थी और कीचड़ से सनी साड़ी बदलकर वह पढ़ाना शुरू करती थी। सबके लिए समान, गुणवत्तापूर्ण और वैज्ञानिक शिक्षा के लिए उनका संघर्ष प्रेरणादायक है।

शहीद-ए-आज़म

भगत सिंह

हम यह ऐलान करते हैं कि युद्ध छिड़ा हुआ है और यह लड़ाई तब तक चलती रहेगी जब तक कि शक्तिशाली व्यक्तियों ने भारतीय जनता और श्रमिकों की आय के साधनों पर अपना एकाधिकार कर रखा है--चाहे ऐसे व्यक्ति अंग्रेज़ पूंजीपति और अंग्रेज़ या सर्वथा भारतीय ही हों, उन्होंने आपस में मिलकर एक लूट जारी कर रखी है। चाहे शुद्ध भारतीय पूंजीपतियों के द्वारा ही निर्धनों का ख़ून चूसा जा रहा हो तो भी इस स्थिति में कोई अंतर नहीं पड़ता।

- भगत सिंह की आखिरी याचिका
(लाहौर जेल, 1931)

बाबासाहेब
भीमराव अम्बेडकर

“ राजनैतिक जीवन में समानता होगी और समाजिक एवं आर्थिक जीवन में असामानता। राजनीती के क्षेत्र में हम ‘एक व्यक्ति, एक वोट’ और ‘एक वोट, एक मूल्य’ के सिद्धांत को पहचानेंगे। लेकिन हमारे आर्थिक एवं सामाजिक जीवन में हम अपने सामजिक और आर्थिक संरचना के कारण, ‘एक व्यक्ति, एक मूल्य’ के सिद्धांत को नहीं अपना पायेंगे। कब तक इस अंतरविरोध पर हमारा सामजिक जीवन आधारित रहेगा? ”

- संविधान सभा में डॉ. अम्बेडकर का अंतिम भाषण

(नयी दिल्ली, 25 नवम्बर 1949)

धरती आबा

बिरसा मुंडा

**“ बिरसा पुकारे एकजुट होवो, छोड़ो ये खामोशी,
मछवारे आवो, दलित आवो, आवो आदिवासी।
हो खेत खालीहान से जागो, नगाडा बजाओ,
लड़ाई छोडी चारा नहीं, सुनो देसवासी ॥ ”**

ब्रिटिश राज में जल-जंगल-ज़मीन के अधिग्रहण के खिलाफ बिरसा मुंडा ने अपने जीवन में सशस्त्र विद्रोह का नेतृत्व किया जिसमें मुंडा, ओराओं और (वर्तमान) ओडिशा, बिहार और झारखंड के अन्य आदिवासियों की बड़ी भागीदारी थी। इसके साथ, ब्रिटिश शासन द्वारा धार्मिक अंतर्विरोध पैदा करके अपने राज को कायम रखने के परियोजनाओं के खिलाफ भी उनका संघर्ष रहा।

नेताजी
सुभाष चन्द्र बोस

सुभाष चन्द्र बोस भारत के अहम स्वतंत्रता सेनानी थे। स्वतन्त्र भारत के लिए उन्होंने *आजाद हिन्द फौज* का गठन किया जिसमे सभी जाति, धर्म और राज्यों के सदस्य थे और जिसका महिला विंग भी था। उन्होंने सदैव हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक ताकतों का बहिष्कार किया जो 1942 के 'भारत छोड़ो' अभियान के समय अंग्रेज़ सरकार के पिछलग्गू बने हुए थे। रंगपुर कांग्रेस सभा (1929) में "नेताजी" ने राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक शोषण से आज़ाद, समाजवादी भारतवर्ष की प्रस्तावना रखी थी।

1857 स्वाधीनता संग्राम की योध्या

झलकारीबाई

आपने सुना होगा " झाँसी की रानी " के बारे में, ब्रिटिश राज के खिलाफ जिनकी लड़ाई के किस्से मशहूर हैं। लेकिन क्या आपको पता है उस शहीद वीरांगना का नाम जिनका जन्म किसी राजमहल में नहीं बल्कि दलित समुदाय के एक आम घराने में हुआ था? *1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम* में जब रानी लक्ष्मीबाई की जान खतरे में थी, तब उन्हें बचाने के लिए झलकारीबाई ने उनका भेष धारण किया और उनके सेना की बागडोर भी संभाली। साम्राज्यवादी ताकतों के खिलाफ इस अंतिम लड़ाई में उन्होंने अपना जीवन अर्पण किया।

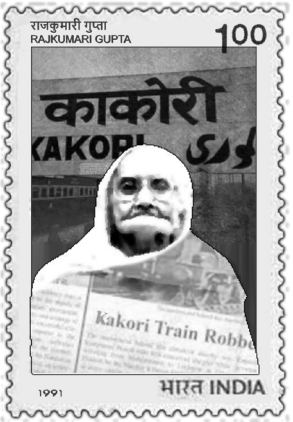

सांझी शहादत, सांझी विरासत

अशफ़ाकउल्लाह ख़ान, राम प्रसाद बिस्मिल और राजकुमारी गुप्ता

अशफाकुल्ला खान, राम प्रसाद बिस्मिल और राजकुमारी गुप्ता *हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA)* से जुड़े क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी थे। 'असहयोग आंदोलन' की विफलता के बाद, दुनियाभर में चल रही वामपंथी लहर और भारत में गांधीवादी संघर्ष में युवाओं की भागीदारी से प्रेरित होकर, उन्होंने खुद को *HSRA* के अंतर्गत पुनर्गठित किया। लखनऊ से आ रही अँगरेज़ सरकार के ट्रेन को काकोरी में लूटने का उनका उद्देश्य यह था की इससे गोला-बारूद खरीदने और समाजवादी साहित्य के प्रकाशन के लिए उनको धन प्राप्त होगा। इसके लिये 19 दिसम्बर 1927 पर अशफ़ाक-बिस्मिल ने फांसी की सज़ा हस्ते-हस्ते कबूल की।

मुंशी प्रेमचंद

"साम्प्रदायिकता सदैव संस्कृति की दुहाई दिया करती है। उसे अपने असली रूप में निकलने में शायद लज्जा आती है, इसलिए वह उस गधे की भांति, जो सिंह की खाल ओढ़कर जंगल में जानवरों पर रौब जमाता फिरता था, संस्कृति का खोल ओढ़कर आती है।"

- साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद के निबंध 'साम्प्रदायिकता और संस्कृति' (1934) से

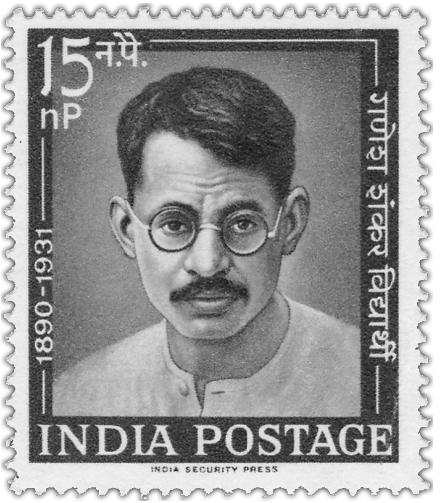

गणेश शंकर
" विद्यार्थी "

स्वाधीनता संग्राम के लिए देशवासियों को जागृत करने में निर्भीक, खोजी पत्रकारिता का अमूल्य योगदान रहा। गणेश शंकर "विद्यार्थी" एक ऐसे पत्रकार थे जिन्होंने दिखाया की सच्चाई के प्रति निष्ठा का मतलब निष्पक्षता नहीं है। उनके बीस साल के तजुर्बे में उन्होंने *प्रताप* और *प्रभा* जैसे अख़बारों के माध्यम से मेहनतकश आवाम के मुद्दों को उजागर किया, जिसके कारण उनको पांच बार जेल का भ्रमण भी करना परा। कानपुर के सांप्रदायिक दंगों में कई मासूमों की जाने बचाते हुए, 25 मार्च 1931 पर उन्होंने अपनी आखरी सांस भरी।

गदरी शहीद
उधम सिंह

दलित सिख परिवार में जन्मे उधम सिंह एक क्रन्तिकारी स्वतंत्रता सेनानी थे जिनको जलियांवाला बाघ हत्याकाण्ड के मुख्य दोषी, माइकल ओ-ड्वायर, की हत्या के लिए फासी की सजा दी गयी थी। जवान उमर में ही वो *गदर पार्टी* के प्रगतिवादी आदर्शों के प्रति आकर्षित हुए। साम्राज्यवाद के खिलाफ वो एशिया, दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका के मज़दूरों-किसानों-सैनिकों को संगठित करने में जुट गए। वे मानते थे की ब्रिटिश शासन के खिलाफ सभी मेहनतकश लोगों की एकता ज़रूरी है। इसी कारण, भारत के तीन मुख्य धर्मों में एकता दर्शाते हुए, उन्होंने 'राम मोहमद सिंह आज़ाद' नाम भी अपनाया था।

सरफ़रोशी की तमन्ना,
अब हमारे दिल में है;
देखना है ज़ोर कितना,
बाज़ु-ए-कातिल में है।

— राम प्रसाद 'बिस्मिल'

इस पुस्तिका में अधूरी मुक्ति के दबे हुए सपने हैं। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने जिस आज़ादी की कल्पना की थी, वो आज भी अधिकांश आबादी को हासिल नहीं हुई है। 73 साल बाद भी, हमारा सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक जीवन गैरबराबरी और शोषण पर आधारित है। सही मायने में आज़ादी और बराबरी के लिए आज संघर्ष में इन दबे हुए सपनों को पुनर्जीवित करने की ज़रुरत है। *आइये, इस पहल में हमारे साथ जुड़िये।*

हमसे संपर्क करे

8879215570 | 9811107835

COLLECTIVE कलेक्टिव

* प्रयोग किये गये सभी फ़ोटो केवल प्रतिरूपात्मक है